PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL 4, ISSUE 3

प्रभावी शिक्षण हेतु शिक्षक का दायित्व एक अध्ययन

डॉ. प्रवीन कुमार त्रिपाठी
सहा० आचार्य शिक्षाशास्त्र,
रामनिवास महाविद्यालय, चित्रकूट गॉधी,
फर्रूखाबाद ।
उत्तर प्रदेश भारत

शिक्षक और शिक्षार्थी शिक्षाशास्त्र के केन्द्र बिन्दु हैं और इनके मध्य की प्रक्रिया का विधिवत् अध्ययन् को समझना समीचीन् है। अध्यापन हेतु प्रयुक्त होने वाली शैली उसकी सजीवता को गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य की अंत:प्रक्रिया जब लक्ष्य केन्द्रित होती है तब वह दोनों के व्यक्तित्व को विकसित एवं प्रभावित करती है।

शिक्षण कार्य_को प्रभावी बनाने हेतु उसको, छात्र की रूचि, उसके पूर्व ज्ञान, विषयवस्तु को आरम्भ करने के तरीके को ध्यान में रखना आवश्यक है। क्रिया द्धारा सीखना, जीवन से सम्बद्धता, हेतु, चुनाव, विभाजन, पुनरावृत्ति आदि सिद्धान्त शिक्षण को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन सभी शिक्षा सिद्धान्तों को समझने के लिए महान शिक्षाशास्त्रियों की अनुभूतियों को समझना होगा।

रविन्द्रनाथ टैगोर — ''उच्चतम शिक्षा वह है जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।''

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार, ''शिक्षा व्यक्ति में अंर्तनिहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।''

जॉन डीवी के अनुसार, ''शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए उसे यह ध्यान रखना होगा कि विषयों का ज्ञान बालक की स्वाभाविक क्रियाओं के माध्यम से हो। विषयों में भी पारस्परिक संबंध या सह संबंध होना आवश्यक है।''

अत: प्रभावी शैक्षणिक दायित्व निभाते समय शिक्षक को शिक्षार्थी में अंर्तनिहित शक्तियों की पूर्णता और सर्वोत्तम गुणों के विकास के प्रति हमेशा सजग एवं सचेष्ट रहना होगा। शिक्षण कार्य संपादन करते समय यदि शिक्षक और शिक्षार्थी विषयवस्तु के आधार पर एक दूसरे के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हुए लाभान्वित हो रहे हैं और यह सब किसी विशिष्ट दिशा में स्पष्ट रूप से गतिशील हो रहा हैं तो यह प्रक्रिया प्रभावी शिक्षण के दायित्व की पूर्ति हेतु शिक्षक के दायित्व का निर्वाह करने वाले एक प्रगतिशील शिक्षक होने का भान कराती है।

समाज एवं उसकी आवश्यकताएं हमेशा से गतिशील एवं परिवर्तनशील रही है। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा का स्वरूप भी परिवर्तन की आँधी से प्रभावित होता रहा है। परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप अपने आप को ढाल लेना ही सर्वांगीण विकास में महत्वपूण्र्ण भूमिका निभाता है। वर्तमान परिवेश को ध्यान में रखकर जब शिक्षक शिक्षार्थी के साथ शिक्षण की अंत:क्रिया करता है वह अपने प्रभावी शिक्षण की अभिप्रेरणा से शिक्षार्थी के व्यक्तित्व पर अमिट छाप छोड़ने में कामयाब होता है। व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु बीज रूप में सन्निहित विभिन्न शीलगुणों का विकास करने की पटकथा का निर्माण कर शिक्षक शिक्षार्थी के जीवन पर अपने प्रभावी शिक्षण की एक ऐसी छाप छोड़ने में कामयाबी पाता है जो कि उसकी भूमिका के दायित्व का निर्वाह करने के साथ न्याय कर पाने में सक्षम है।

शिक्षण कार्य_को प्रभावी बनाने के दायित्वनिर्धारण में यह तथ्य भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि शिक्षार्थी को ही शिक्षित करना एक शिक्षक का लक्ष्य नहीं होना चाहिए अपितु उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि शिक्षक भी लगातार अपने व्यक्तित्व को विकसित करने हेतु आवश्यक शीलगुणों को लगातार निखारने के प्रति प्रयत्नशील एवं गतिशील रहे। चूंकि छात्रों द्वारा अपने शिक्षक के प्रति जिस मनोभाव एवं दशा के साथ शिक्षक सम्बद्धता बनायी जाती है उसके कारण शिक्षक से जुड़ा कोई भी पहलू उनसे अछूता नहीं रह सकता, चाहे शिक्षक के बताए मार्ग से हो सकता है शिक्षार्थी चूक जाए।

समाज में तीव्र परिवर्तन गतिमान है। ऐसी परिस्थितियों में मानवी ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में तीव्रता से वृद्धि हो रही है और ऐसी तीव्र गति सें समाज में परिवर्तन भी अवश्यंभावी है। नि:संदेह इससे शिक्षा के क्षेत्र में नई समस्यायें भी उत्पन्न हो रही हैं। नए आयाम एवं आव्यूहों का विकास भी पुरजोर हो रहा है जिससे शिक्षा के उद्देश्य एवं मूल्यों में परिवर्तन हो रहा है ऐसे में प्रभावी शिक्षण स्तर को बनाए रखने हेतु

शिक्षण की नवीन विधियों की खोज पर ध्यान केन्द्रित किया जाना आवश्यक हो गया है। फलस्वरूप शिक्षण की समस्याओं का निदान करने हेतु समस्या समाधान का शिक्षण, पर्यवेक्षण अध्ययन्, खोज आयाम, योजना विधि, शैक्षिक – पर्यटन आदि के प्रयोग पर ज्यादा ध्यान दिया जाने लगा।

समस्या समाधान शिक्षण के स्वरूप में अत्यधिक जटिल स्तर माना जाता है। ऐसी स्थिति में प्रभावी शिक्षण हेतु वाद– विवाद, छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं तथा अध्ययन् कौशलों के विकास, मनोवैज्ञानिक बोध स्तर, प्रकरण की रूपरेखा अथवा समीक्षा तथा संबंधित पाठ्य पुस्तकों की सूची, समीक्षा काल में भावात्मक पक्ष के विकास पर बल, अतीत की घटनाओं और अवशेषों के आधार पर तथ्यों का वर्णन, सूझ – शक्ति का विकास करते हुए सर्जनात्मक चिन्तन का समावेश करना अवश्यंभावी है। एक अन्य नवीन योजना विधि का प्रयोग करना भी नितान्त आवश्यक है। छात्रों की रूचियों को एक विशेष दिशा में लगाया जाता है परन्तु शिक्षक को यह ध्यान रखना पडता है कि वह हमेशा व्यवस्था के अनुसार ही आगे बढ़े।

प्रभावी शिक्षण प्रक्रिया का प्रमुख उद्देश्य हमेशा से अधिगम हेतु ऐसी परिस्थितियों को उत्पन्न करना होता है जिससे कि छात्र ज्यादा से ज्यादा सीखने के अनुभव प्राप्त कर सकें। कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षक को शाब्दिक तथा अशाब्दिक अंत:प्रक्रिया द्वारा अधिगम परिस्थितियों उत्पन्न करनी होती हैं जिससे कि छात्र श्रव्य इन्द्री से सीखने का अनुभव प्राप्त कर सके। इससे छात्र की स्मरण शकित और कल्पना शक्ति को अधिक कार्य करना पड.ता है। छात्र कक्षा शिक्षण के ज्ञान को जल्दी भूल जाते हैं क्योंकि उन्हें कक्षा शिक्षण के दौरान वास्तविक अनुभव प्राप्त नहीं होता है। वास्तविक अनुभव या जीवन्त होने का आभास शैक्षिक पर्यटन के रूप में प्राप्त कर शिक्षण को और अधिक रूचिकर एवं बोधगम्य बना पाने में सफल हो पाते हैं।

प्रभावी शिक्षण के दौरान शिक्षण दायित्व निभाते समय एक आदर्श शिक्षक को वर्तमान सामाजिक व्यवस्था एवं समाज की जटिल हो चुकी संरचना को भी ध्यान में रखना होता है। सामाजिक जटिलता के मध्य, छात्र को उपयुक्त एवं समुचित पथ पर अग्रसित करने की भावना एवं कौशल का विकास करने हेतु निर्देशन प्रक्रिया को भी शिक्षक द्वारा महत्व देना जरूरी हो गया है।

शिक्षक के कुशल निर्देशन के आधार पर ही एक छात्र अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, कौशलों, व्यक्तित्व से संबंधित विशेषताओं का समुचित उपयोग करने में सक्षम हो पाता है। मात्र बुद्धिमत्तापूर्ण निर्देशन में प्रदत्त शिक्षण को ही उत्तम शिक्षण की कोटि में नहीं रखा जा सकता है। अच्छे शिक्षण के अभाव में दिया गया निर्देशन भी शिक्षण काल के दौरान शिक्षक के प्रभावी शिक्षण के दायित्व का निर्वहन करते समय एक दूसरे से संबंधित हो जाते हैं।

अत: इस प्रकार हम कह सकते हैं कि एक शिक्षक को कक्षा शिक्षण के दौरान प्रभावी शिक्षण के दायित्वों का निर्वहन करते समय इन सभी तथ्यों, तत्वों, विशेषताओं, प्रक्रियाओं का पूर्ण सहभागिता के साथ प्रयोग करना होगा तभी छात्र एवं शिक्षक दोनों के हित सध सकेगें।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१• चौबे, डॉ० सरयू प्रसाद, डौ० अखिलेश, आधुनिक शिक्षा के दार्शनिक और समाज शास्त्रीय सिद्वांत, शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूअर्स इलाहाबाद।

२• डॉ० राम शकल पाण्डेय, विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा - शास्त्री, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।

३• डॉ० अरूण कुमार सिंह, शिक्षा मनोविज्ञान भारती भवन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूअर्स।

४• डॉ० आर० के० शर्मा, शिक्षा तकनीकी के तत्व एवं प्रबंधन, मुद्रक राज प्रिन्टर्स १०३/२, जयदेवी नगर, गढ. रोड, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ।

५• डॉ० सीताराम जायसवाल, शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श, अग्रवाल पब्लिकेशन निर्भय नगर, गैलाना रोड, आगरा - ७, मुद्रक प्रेमलता ऑफसेट प्रेस आगरा।

६• गुरूशरण दास त्यागी, शिक्षा के सिद्वांत, अग्रवाल पब्लिकेशन ISO 9001: 2008 CERTIFIED COMPANY, SANJAY PLACE AGRA.